

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II---खण्ड 3--- उपखण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं∘ 389]

नई विल्ली, बुबबार, भ्रगस्त 30, 1972/भाव 8, 1894

No. 389]

NEW DELHI, WEDNESDAY, AUGUST 30, 1972/BHADRA 8, 1894

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती हैं जिससे कि वह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके। Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 30th August 1972

- S.O. 568(E).—In exercise of the powers conferred by clause (2) of article 77 of the Constitution, the President hereby makes the following rules further to amend the Authentication (Orders and other Instruments) Rules, 1958, namely:—
- 1, (1) These rules may be called the Authentication (Orders and other Instruments) Fifth Amendment Rules, 1972.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. In rule 2 of the Authentication (Orders and other Instruments) Rules, 1958, after entry (5), the following entry shall be inserted, namely:—
 - "(5-A) in the case of orders and other instruments relating to the Ministry of Finance (Department of Banking), by a Director in that Department; or"

[No. F.3/4/72-Public.I.]

K, R. PRABHU, Jt. Secy.

गृह मंत्रालय

ग्रधिसूचना

नई दिल्ली, 30 श्रगस्त, 1972

का० थ्रा० 568(अ).----राष्ट्रपति, संविधान के श्रनुच्छेद 77 के खण्ड (2) इत्तर प्रदत्त शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, श्रिधिप्रमाणन (श्रादेश श्रीर श्रन्य लिखत) नियम, 1958 में श्रीर श्रामे संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम, एतद्द्वारा बनाने हैं, श्रर्थात् :---

- (1) इन नियमों का नाम अधिप्रमाणन (आदेश और अन्य निखत) पंत्रम संगोधन नियम , 1972 होगा ।
 - (2) ये राजपल्ल में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।
- 2. ग्रधिप्रमाणन (ग्रादेश ग्रौर श्रन्य लिखत) नियम, 1958 के नियम 2, में, प्रविष्टि (5) के पश्चात, निम्नलिखित प्रविष्ट श्रन्त:स्थापित की जाएगी, ग्रर्थान :--
 - "(5-क) वित्त मंत्रालय (बैंककारी विभाग) सम्बन्धी आदेशों और अन्य शिखतों की दशा में, उस विभाग के किसी निर्देशक द्वारा ; या

[सं० फा० 3/4/72-पब्लिक-1] के०श्रार०प्रभु, संयुक्त सचिव ।